https://www.uokonline.com

This question paper contains 8 printed pages]

133-N

B.A. (Part III) Examination, 2020

(For Non-Collegiate Candidates)

हिंदी साहित्य

Paper II

(नाटक और निबंध)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 100

*इस प्रश्नपत्र में तीन **खण्ड** निम्न प्रकार हैं :*

खण्ड 'अ' ***Max. Marks-10***

*इस **खण्ड** में **एक** अनिवार्य प्रश्न है जिसमें 10 भाग हैं। प्रत्येक भाग का उत्तर 20 शब्दों से अधिक न हो। **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड 'ब' ***Max. Marks-50***

*इस **खण्ड** में 10 **प्रश्न** अथवा व्याख्याएँ हैं। प्रत्येक इकाई से **एक** प्रश्न अथवा व्याख्या का चयन करते हुए, कुल 5 प्रश्नों अथवा व्याख्याओं के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न अथवा व्याख्या का उत्तर **250 शब्दों** से अधिक न हो। **सभी** प्रश्नों अथवा व्याख्याओं के अंक समान हैं।*

https://www.uokonline.com

खण्ड 'स' ***Max. Marks-40***

*इस **खण्ड** में 4 प्रश्न हैं (प्रश्नों के उपभाग भी हो सकते हैं)। इस **खण्ड** में एक इकाई से अधिकतम एक प्रश्न होगा। कुल दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों से अधिक न हो। **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड-अ

1. (i) 'भगवान सोम की मैं कन्या हूँ।' 'भारत-दुर्दशा' नाटक में यह कथन किसका है ?

(ii) 'रूप का ऐसा तीव्र आलोक! नहीं, मैंने कभी नहीं देखा था।' शकराज को ऐसा क्यों कहना पड़ा ?

(iii) भोलाराम की पेंशन स्वीकृत न होने का क्या कारण था ? लिखिए।

(iv) आपके पाठ्यक्रम में शामिल 'भारतीय संस्कृति और राष्ट्र' निबंध के रचनाकार का नाम लिखिए।

(v) आचार्य शुक्ल के अनुसार सच्चे उत्साही कौन कहलाते हैं ?

(vi) बालकृष्ण भट्ट ने साहित्य को जन-समूह के हृदय का विकास क्यों कहा है ? लिखिए।

https://www.uokonline.com
https://www.uokonline.com
https://www.uokonline.com
https://www.uokonline.com

(vii) निबंध के दो प्रमुख गुण लिखिए।

(viii) भावात्मक निबन्ध किसे कहते हैं ?

(ix) निम्नलिखित नाटकों के रचनाकारों का नाम लिखिए :

(1) एक और द्रोणाचार्य

(2) हानूस।

(x) नाटक में अभिनयशीलता को क्यों महत्वपूर्ण माना गया है ?

खण्ड-ब

निम्नांकित गद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

इकाई-I

2. राजा अपने राष्ट्र की रक्षा करने में असमर्थ है, तब भी उस राजा की रक्षा होनी ही चाहिए! अमात्य, यह कैसी विवशता है। तुम मृत्युदण्ड के लिये उत्सुक! महादेवी आत्महत्या करने के लिये प्रस्तुत! फिर यह हिचक क्यों ? एक बार अंतिम बल से परीक्षा कर देखो। बचोगे तो राष्ट्र और सम्मान भी बचेगा, नहीं तो सर्वनाश! 10

अथवा

3. हाँ, सुनिए। फूट, डाह, लोभ, भय, उपेक्षा, स्वार्थपरता, पक्षपात, हठ, शोक, अश्रुमार्जन और निर्बलता इन एक दरजन दूती और दूतों को शत्रुओं की फौज में हिला-मिलाकर ऐसा पंचामृत बनाया कि सारे शत्रु बिना मारे घंटा पर के गरुड़ हो गए। फिर अंत में भिन्नता गई। इसने ऐसा सबको काई की तरह फाड़ा कि भाषा, धर्म, चाल, व्यवहार, खाना, पीना सब एक-एक योजना पर अलग-अलग कर दिया। 10

इकाई-II

4. फल की विशेष आसक्ति से कर्म के लाघव की वासना उत्पन्न होती है; चित्त में यही आता है कि कर्म बहुत कम या बहुत सरल करना पड़े और फल बहुत-सा मिल जाये। श्रीकृष्ण ने कर्म मार्ग से फलासक्ति की प्रबलता हटाने का बहुत ही स्पष्ट उपदेश दिया; पर उनके समझाने पर भी भारतवासी इस वासना से ग्रस्त होकर कर्म से तो उदास

https://www.uokonline.com

https://www.uokonline.com

हो बैठे और फल के पीछे इतने पड़े कि गरमी में ब्राह्मण को एक पेठा देकर पुत्र की आशा करने लगे; चार आने रोज का अनुष्ठान कराके व्यापार से लाभ, शत्रु पर विजय, रोग से मुक्ति, धन-धान्य की वृद्धि तथा और भी न जाने क्या-क्या चाहने लगे। 10

अथवा

5. इसलिए अब इस सभ्यता और उन्नति के युग में पश्चिम निवासियों की यदि धर्म पर वह श्रद्धा नहीं है जो उनके पूर्वजों की थी तो वह सकारण है। यद्यपि पूर्वापेक्षा अब उनके धर्म का भी बहुत कुछ संस्कार हो गया है और शिक्षा की उन्नति के साथ-साथ जिसमें यूरोप और अमेरिका ने सबसे अधिक भाग लिया है, उनके धर्म में भी सहिष्णुता, स्वतंत्रता और उदारता की मात्रा बढ़ गई है, तथापि धर्मवाद के परिणामस्वरूप जो कड़वे फल उनको चखने पड़े हैं, उन्होंने उनको धर्म की सीमा नियत कर देने के लिए बाधित किया। 10

https://www.uokonline.com

6. एक राज्य की बनावट के पीछे हमेशा एक संस्कृति की बनावट छिपी रहती है किन्तु स्वयं संस्कृति का आकार बहुत अंशों में उन बिम्बों द्वारा निर्धारित होता है जो मनुष्य अपने बारे में संजोता है। ईसाई धर्म में जिस तरह ईश्वर की कल्पना मनुष्य के रूप में की गई है, उसी तरह यूरोपीय मनुष्य ने अपने रूप में राजतंत्र और समाज व्यवस्था की परिकल्पना की है। दोनों में ही मनुष्य 'केन्द्र' में है जो उसे एक तरफ 'ईश्वर' दूसरी तरफ बाहरी जगत से जोड़ता है। अत: पिछले तीन सौ वर्षों में—विशेषकर रेनेसां के बाद-यूरोप में जिन राज्यतंत्रों की स्थापना हुई, उसका सांस्कृतिक स्रोत वह 'छवि' थी, जो मनुष्य ने अपने बारे में बनाई थी। 10

अथवा

7. मूल्य किसे कहते हैं ? यह प्रश्न निस्संदेह बहुत व्यापक है, और यह भी कहा जा सकता है कि युग-युगान्तर से दार्शनिकों और साधकों दोनों की मूल जिज्ञासा यही रही है—

https://www.uokonline.com

https://www.uokonline.com

वह अंतिम कसौटी क्या है जिस पर कसकर हम किसी भी कृति के धातु को पहचान सकते हैं किन्तु अपनी जिज्ञासा को सीमित रखना असम्भव नहीं है और न ऐसी सीमित पड़ताल अनुपयोगी ही होगी। 10

इकाई-IV

8. हिंदी नाटक के विकास में जयशंकर प्रसाद के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। https://www.uokonline.com 10

अथवा

9. हिंदी निबंध की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालिए। 10

इकाई-V

10. 'भारत-दुर्दशा' नाटक की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए। 10

अथवा

11. निबंध की प्रमुख शैलियाँ कौन-कौनसी हैं ? एक लेखन-शैली को सविस्तार समझाइए। 2+8=10

खण्ड-स

12. ध्रुवस्वामिनी की चारित्रिक विशेषताओं को सोदाहरण समझाइए। 20

13. 'हल्दी-दूब और दधि-अच्छत' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए। 20

https://www.uokonline.com
https://www.uokonline.com
https://www.uokonline.com

https://www.uokonline.com

14. 'साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है' पाठ के आधार पर बताइए कि साहित्य का मानव जीवन के लिए क्या उपयोग है ? 20

15. निम्नांकित पर टिप्पणी लिखिए : 10+10=20

(i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिंदी निबंध

(ii) हिंदी रंगमंच।

https://www.uokonline.com
https://www.uokonline.com
Whatsapp @ 9300930012
Send your old paper & get 10/-
अपने पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से